घुसपैठी प्रजातियां

नवनीत कुमार गुप्ता

जीवों का एक इकोतंत्र से दूसरे इकोतंत्र में पहुंचना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। हर इकोतंत्र एक गतिशील इकाई है जिसमें कुछ प्रजातियां लुप्त होती हैं और उनका स्थान अन्य प्रजातियां ले लेती हैं। और यह लगातार चलता रहा है।

किसी भी जीव के प्राकृतिक रूप से एक इकोतंत्र से दूसरे इकोतंत्र में पहुंचने की प्रक्रिया बहुत धीमी गति से होती है। किसी भी बाहरी जीव को दूसरे इकोतंत्र में अपने आपको बनाए रखने के लिए स्थानीय जीवों के साथ स्थान व खाने के लिए कड़ी प्रतियोगिता करनी पड़ती है और अधिकतर वे उसमें सफल नहीं हो पाते और स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं। यदि सफल हो जाएं तो वे दूसरे इकोतंत्र का हिस्सा बन जाते हैं। यदि ऐसा होता है तो वे खतरनाक साबित नहीं होते। लेकिन कभी-कभी बाहरी प्रजातियां दूसरे इकोतंत्र में अन्य प्रजातियों पर हावी हो जाती हैं और उस स्थिति में वह प्रजाति उस क्षेत्र के इकोतंत्र को प्रभावित करती हुई जैव विविधता के लिए खतरा भी बन सकती है।

पेड़-पौधों व जीव-जंतुओं की कुछ प्रजातियां घुसपैठी होती हैं। जैसे पार्थेनियम यानी गाजर घास जो किसी भी क्षेत्र में जाकर वहां दूसरी प्रजाति के पौधों को उगने नहीं देती। और जब तक हमें इनकी घुसपैठ का पता चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

गाजर घास एक घुसपैठिया पौधा है जो विदेश से भारत आया। सन 1950 में इस पौधे के बीज अमरीका से आए संकर गेहूं के साथ भारत पहुंचे। इसे सबसे पहले 1950 में पुणे में देखा गया था। यह आने के बाद धीरे-धीरे फैलने लगी और आज भी फैलती जा रही है। इसकी एक विशेषता यह है कि यह हर मिट्टी में उग आती है। यह पूरे विश्व में पाई जाने वाली सबसे खतरनाक खरपतवारों में से एक है।

गाजर घास महकदार होती है। इसमें उपस्थित रसायनों से हमें एलर्जी हो सकती है। और इसके परागकणों से कई लोगों में दमा की शिकायत भी हो जाती है। असल में इसमें कुछ ऐसे पदार्थ हैं जो एलर्जी पैदा कर सकते हैं।

गाजर घास स्थानीय जैव विविधता के लिए खतरा बनती जा रही है जिसके दूरगामी परिणाम ठीक नहीं होंगे। गाजर घास की बढ़ती रफ्तार से हमारा पूरा स्थानीय इकोतंत्र ही गड़बड़ा रहा है।

जलकुम्भी भी इसी प्रकार का एक घुसपैठिया पौधा है जिसे वाटर लिली भी कहा जाता है। यह भी एक विदेशी पौधा है जो ब्राज़ील से भारत में आया है। इसे यहां बगीचों के शौकीनों ने फैलाया है। इसके जामुनी फूल बहुत ही प्यारे होते हैं जिसके कारण हर कोई इनसे आकर्षित हो जाता है। आज यह पौधा 50 से अधिक देशों में फैल चुका है और वहां सबके लिए समस्या बन गया है।

गाजर घास की तरह जलकुम्भी का पौधा भी स्थानीय क्षेत्र पर कब्ज़ा जमा लेता है। जलकुम्भी के पौधे धीरे-धीरे पूरे तालाब को ढंक लेते हैं। जब नीचे सूरज की रोशनी नहीं पहुंचती तब अन्य जलीय पौधे नष्ट हो जाते हैं। इसके अलावा जलकुम्भी की जड़ें पानी की सारी ऑक्सीजन सोख लेती हैं और उसकी अम्लीयता भी बढ़ा देती हैं।

विदेशी मूल का पौधा होने की वजह से हमारे देश में इसका कोई प्राकृतिक भक्षक नहीं है। सो इसने तालाबों के इकोतंत्र को प्रभावित कर दिया है।

ऐसा ही एक पौधा है लैन्टाना जो उत्तर भारत के पहाड़ी इलाकों की जैव विविधता के लिए खतरा बना हुआ है।

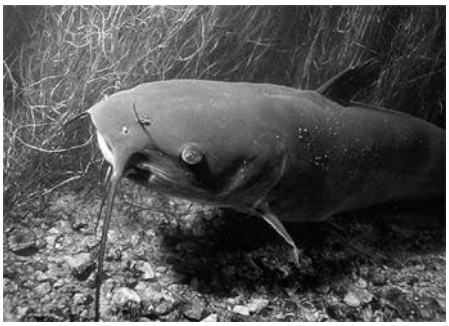

प्राणी भी घुसपैठिए हो सकते हैं और ज़रूरी नहीं कि ये विदेश से ही आएं। अंडमान और निकोबार द्वीपों पर कुछ हिरणों को लगभग 50 साल पहले छोड़ा गया था। वहां पर उनका कोई भक्षक नहीं था इसलिए उनकी संख्या बढ़ती ही गई। हिरणों की बढ़ती संख्या ने वहां के स्थानीय पेड़-पौधों को चट कर दिया और एक समय तो हिरणों की बढ़ती संख्या वहां की पूरी जैव विविधता के लिए खतरा साबित होने लगी थी।

भारत ही नहीं विदेशों में भी घुसपैठिए प्रजातियों की संख्या ने कई बार गंभीर समस्या उत्पन्न की हैं। जैसे एक समय इस्राइल में हमारे तोते भी परेशानी का कारण बने थे जो आज से 25 साल पहले वहां गलती से पहुंच गए थे और एक समय उनकी संख्या इतनी बढ़ गई थी कि वे फलों की फसलों के लिए खतरा बन गए थे।

इसी प्रकार हमारे पड़ोसी बांगला देश को भी केटफिश मछली से ऐसी ही परेशानी का सामना करना पड़ा था। वहां विदेशी मांसाहारी केटफिश स्थानीय मछली प्रजातियों के लिए खतरा बन गई थीं, जिसके कारण स्थानीय मछलियों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया था और वहां की जैव विविधता प्रभावित हुई थी।

असल में हर इकोतंत्र में हर जीव का एक प्राकृतिक भक्षक होता है जिससे उसकी संख्या एक सीमा तक ही बढ़ती है। प्रजातियों का एक इकोतंत्र से दूसरे इकोतंत्र में पहुंचना या एक देश से दूसरे देश में पहुंचना स्थानीय जैव विविधता के लिए हानिकारक हो सकता है।

हर घुसपैठिया गाजर घास या कैटफिश की तरह स्थानीय इकोतंत्र को प्रभावित करता है। लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि गाजर घास या कैटफिश की तरह हर जीव स्थानीय इकोतंत्र को इस हद तक प्रभावित करे कि वह एक खतरा बन जाए।

जब कोई एक जीव दूसरे इकोतंत्र में पहुंच जाता है और दूसरे इकोतंत्र में उसे सभी परिस्थितियां अनुकूल मिल जाती हैं तो वह घुसपैठिया खतरनाक साबित हो सकता है। इसलिए अपने स्थानीय इकोतंत्र के साथ कोई भी ऐसी छेड़छाड़ ना की जाए जिससे स्थानीय जैव विविधता को कोई खतरा हो। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 97 का हल

ता	प	मा	न		ख		ला	वा
	त		प	रिं	दा			य
ह	वा		ना		न	भ	च	र
	र		घ	ड़ी		ड्ड		स
		की	ट		नी	री		
ए		मि		सो	म		म	
ह	थि	या	र		ह		श	ब
लिं			हि	च	की		रू	
श	नि		त		म	ल	म	ल